Purshottamdas H. Purohit

Purshottamdas H. Purohit was a karmayogi, an unsung freedom fighter, a visionary entrepreneur, and a devoted philanthropist. He was a man who lived a life devoted to hard work and selfless service to all sections of society.

He was born on August 2, 1920, into a Rajpurohit (Brahmin) family in Basant, Pali, Rajasthan. He lost his father at the age of three and was raised by his mother. Due to limited resources for farming, he moved to Mumbai at the tender age of ten in search of a livelihood. Through dedication and hard work, he eventually earned recognition as a noted chef.

His exceptional culinary skills were acknowledged when he was chosen to accompany his employers as head chef on a business tour to Europe in 1939. This tour, originally brief, was extended to four years due to the outbreak of World War II. His travels through countries such as Italy, England, France, Austria and Germany broadened his worldview, though he remained deeply connected to his roots.

During his time in Europe, he met his hero, Bharat Ratna Netaji Subhas Chandra Bose and became affiliated with the Azad Hind movement. His growing involvement led him to become a trusted confidant of Netaji. He played a discreet yet vital role in the movement, seeing it as his duty to the Nation. The story of India's freedom is built on the silent sacrifices of heroes like him.

After independence, he started a modest lodging and boarding venture in Mumbai, which he developed into the renowned Adarsh Group of Hotels. This included Adarsh Lodge, Adarsh Hotel, Adarsh Palace, Adarsh Mahal and Adarsh Baug. As a visionary entrepreneur, he created employment opportunities in both Mumbai and Rajasthan, promoting economic growth and improving lives. His commitment to service and excellence earned him loyal clients from diverse communities.

He channelled his energy and resources towards the upliftment of society, particularly the underprivileged. Whether responding to natural disasters such as floods and droughts or offering support during periods of social unrest, he consistently extended help. He also collaborated actively with Government bodies, including the Municipal Corporation, Police, and the Maharashtra Housing and Area Development Authority.

Greatly inspired by the ideologies of Bharat Ratna Sardar Vallabhbhai Patel and Bharat Ratna Lal Bahadur Shastri, he celebrated 'Shastri Jayanti' each year at Adarsh Hotel. Recognising his commitment to social welfare, the Government of Maharashtra appointed him Justice of the Peace and Special Executive Magistrate.

Although he could not pursue formal education, he was a strong advocate of educating the younger generation. To advance this cause, he contributed towards building a hostel in Falna, Rajasthan, offering a safe and encouraging environment for students. He also provided financial assistance to many aspiring learners.

In 1989, he founded the P. H. Purohit (Rawat Singh) Charitable Trust. Today, the trust continues to operate following his values.

The Department of Posts is proud to release a commemorative postage stamp celebrating the life and legacy of Purshottamdas H. Purohit. This stamp is a tribute to his remarkable journey from humble beginnings to becoming a beacon of hope, resilience, and nation-building.

Credit

Stamp/FDC/Brochure/ Cancellation Cachet	:	Ms. Nenu Gupta
Text	:	Referenced from content provided by the Proponent

भारतीय डाक
डाक सेवा-जन सेवा
India Post
Dak Sewa-Jan Sewa

डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS

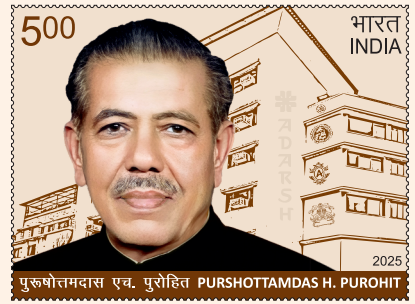

पुरूषोत्तमदास एच. पुरोहित
PURSHOTTAMDAS H. PUROHIT

विवरणिका BROCHURE

पुरुषोत्तमदास एच. पुरोहित

पुरुषोत्तमदास एच. पुरोहित एक कर्मयोगी, एक गुमनाम स्वतंत्रता सेनानी, एक दूरदर्शी उद्यमी और एक समर्पित समाज सेवक थे। वे एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने कठोर परिश्रम और समाज के सभी वर्गों के प्रति निस्वार्थ सेवा के लिए अपना जीवन समर्पित किया।

उनका जन्म 2 अगस्त, 1920 को राजस्थान के पाली जिले के बसंत ग्राम में एक राजपुरोहित (ब्राह्मण) परिवार में हुआ था। तीन वर्ष की अल्पायु में ही उनके पिता का देहांत हो गया और उनकी मां ने उनका पालन–पोषण किया। खेती के सीमित संसाधनों के कारण, वे आजीविका की तलाश में दस वर्ष की सुकोमल आयु में मुंबई चले गए। अपने समर्पण और कड़ी मेहनत से उन्होंने अंततः एक प्रसिद्ध शेफ के रूप में पहचान बनाई।

उनकी असाधारण पाक–कला को उस समय पहचान मिली जब उन्हें 1939 में अपने नियोक्ताओं के साथ यूरोप के एक कारोबारी दौरे पर प्रमुख शेफ के रूप में चुना गया। शुरुआत में यह दौरा थोड़े समय के लिए था। लेकिन द्वितीय विश्व युद्ध छिड़ जाने के कारण, यह दौरा चार वर्षों की लंबी अवधि तक जारी रहा। इस अवधि के दौरान इटली, इंग्लैंड, फ्रांस, ऑस्ट्रिया और जर्मनी जैसे देशों की उनकी यात्राओं ने उनकी विश्वदृष्टि को व्यापक बनाया, फिर भी वे अपनी जड़ों से गहराई से जुड़े रहे।

यूरोप में अपने दौरे के समय, उन्हें अपने हीरो, भारत रत्न नेताजी सुभाष चंद्र बोस से भेंट करने का अवसर प्राप्त हुआ और वे आजाद हिंद आंदोलन से जुड़ गए। आंदोलन में उनकी बढ़ती सक्रियता ने उन्हें नेताजी का अत्यधिक विश्वासपात्र व्यक्ति बना दिया। उन्होंने राष्ट्र के प्रति अपना कर्तव्य समझते हुए, इस आंदोलन में एक चातुर्यपूर्ण लेकिन महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भारत की स्वतंत्रता की कहानी उनके जैसे वीरों के मौन बलिदानों की गाथा है।

स्वतंत्रता के बाद, उन्होंने मुंबई में एक साधारण लॉजिंग और बोर्डिंग उद्यम शुरू किया, जिसे उन्होंने सुप्रसिद्ध आदर्श होटल ग्रुप के रूप में विकसित किया। इसमें आदर्श लॉज, आदर्श होटल, आदर्श पैलेस, आदर्श महल और आदर्श बाग शामिल थे। एक दूरदर्शी उद्यमी के रूप में, उन्होंने मुंबई और राजस्थान दोनों में रोजगार के अवसर सृजित किए, आर्थिक विकास को बढ़ावा दिया और लोगों के जीवन में सुधार किया। सेवा और उत्कृष्टता के प्रति उनकी प्रतिबद्धता के कारण उनको विविध समुदायों से ऐसे वफादार ग्राहक प्राप्त हुए जिनका विश्वास और जुड़ाव उनके व्यवसाय के प्रति बना रहा।

उन्होंने अपनी ऊर्जा और संसाधनों को समाज, विशेषकर वंचित समुदायों के उत्थान के लिए समर्पित किया। चाहे बाढ़ और सूखे जैसी प्राकृतिक आपदाओं का सामना करना हो या सामाजिक अशांति के समय सहायता प्रदान करनी हो, उन्होंने लगातार सहायता प्रदान की। उन्होंने नगर निगम, पुलिस और महाराष्ट्र आवास एवं क्षेत्र विकास प्राधिकरण सहित सरकारी निकायों के साथ भी सक्रिय रूप से सहयोग किया है।

भारत रत्न सरदार वल्लभभाई पटेल और भारत रत्न लाल बहादुर शास्त्री की विचारधाराओं से अत्यधिक प्रेरित होकर, वे हर वर्ष आदर्श होटल में 'शास्त्री जयंती' मनाते थे। समाज कल्याण के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को मान्यता प्रदान करते हुए, महाराष्ट्र सरकार ने उन्हें जस्टिस ऑफ दि पीस और विशेष कार्यपालक मजिस्ट्रेट नियुक्त किया।

यद्यपि वे औपचारिक शिक्षा प्राप्त नहीं कर सके, फिर भी वे युवा पीढ़ी को शिक्षित करने के प्रबल समर्थक थे। इसी उद्देश्य को आगे बढ़ाने के लिए, उन्होंने राजस्थान के फालना में एक छात्रावास के निर्माण में योगदान दिया, जो विद्यार्थियों के लिए एक सुरक्षित और उत्साहजनक वातावरण प्रदान करता है। उन्होंने कई इच्छुक शिक्षार्थियों को वित्तीय सहायता भी प्रदान की।

1989 में, उन्होंने पी. एच. पुरोहित (रावत सिंह) चैरिटेबल ट्रस्ट की स्थापना की। आज भी यह ट्रस्ट उनके मूल्यों के अनुरूप कार्य कर रहा है।

डाक विभाग, पुरुषोत्तमदास एच. पुरोहित के जीवन और विरासत पर समर्पित एक स्मारक डाक–टिकट जारी करते हुए गर्व का अनुभव करता है। यह डाक–टिकट एक साधारण पृष्ठभूमि से ऊपर उठकर प्रेरणा, संघर्ष और राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की उनकी विलक्षण यात्रा का प्रतीक है।

आभार :

डाक–टिकट/प्रथम दिवस आवरण/विवरणिका/विरूपण कैशे : सुश्री नीनू गुप्ता

पाठ : प्रस्तावक से प्राप्त सामग्री के आधार पर

तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	500 पैसे
Denomination	:	500p
मुद्रितडाक–टिकटें	:	304950
Stamps Printed	:	304950
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

©डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

©Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamp, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 15.00